NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 08-10-2024

विषय सूची

राष्ट्रीय खेल नीति 2024 का मसौदा

भारत के प्रधानमंत्री और मालदीव के राष्ट्रपति के बीच द्विपक्षीय वार्ता

सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (UHC)

निवेश पर भारत-UAE उच्च स्तरीय संयुक्त कार्य बल

इंसॉल्वेन्सी और बैंककरप्सी फ्रेमवर्क की वसूली दरों को बढ़ाने के लिए सुधारों की आवश्यकता

सतत भविष्य के लिए उच्च प्रदर्शन वाली इमारतों की आवश्यकता

संक्षिप्त समाचार

बंतमम्कहम ने भारत को BBB+ सौंपा

शुष्क बंदरगाह

छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (SMR)

अल्ट्रासाउंड से कैंसर का पता लगाने की नई विधि

DefConnect 4.0 में ADITI 2.0 और DISC 12 लॉन्च किए गए

लाल पांडा

हलारी गधा

भारतीय जंगली गधा

राष्ट्रीय अनुभव पुरस्कार योजना, 2025

राष्ट्रीय खेल नीति 2024 का मसौदा

सन्दर्भ

- युवा मामले और खेल मंत्रालय ने जनता की प्रतिक्रिया के लिए राष्ट्रीय खेल नीति 2024 का मसौदा जारी किया है।

नीति के प्रमुख बिंदु

- NSP की कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं;
  - शारीरिक साक्षरता पहल को लागू करना,
  - एक मजबूत प्रतिभा पहचान और विकास प्रणाली विकसित करना,
  - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शैक्षणिक संस्थानों में खेल और शारीरिक साक्षरता को प्रमुख विषयों के रूप में विकसित करना।
- खेलों को करियर के रूप में मान्यता और आकर्षण बढ़ाने के लिए एक राष्ट्रीय खेल शिक्षा बोर्ड की स्थापना की जाएगी।
- इसमें खेल विकास में निजी क्षेत्र की व्यापक भागीदारी को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करने के लिए नीतियों और योजनाओं का आह्वान किया गया है।

नई नीति की आवश्यकता

- वर्तमान NSP 2001 में जारी किया गया था और एक नया NSP तैयार करना अनिवार्य है, जिसमें खेल के क्षेत्र में नवीनतम विकास शामिल हो तथा वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक रोडमैप प्रस्तुत किया जाए।
- **सीमित बुनियादी ढाँचा:** भारत की अधिकांश जनसँख्या, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, खेल सुविधाओं, कोचों और प्रतिस्पर्धी अवसरों तक न्यूनतम पहुँच रखती है।
- **प्रतिभा की खराब पहचान:** अमेरिका या चीन जैसे मजबूत खेल प्रणालियों वाले देशों के विपरीत, भारत में एक संगठित, राष्ट्रव्यापी प्रतिभा पहचान कार्यक्रम का अभाव है जो युवा एथलीटों की खोज और पोषण करता है।
- **राजनीतिक हस्तक्षेप:** खेल निकायों की कार्यप्रणाली में राजनीतिक प्रभाव पक्षपात को जन्म देता है, जिससे एथलीटों और कोचों का योग्यता-आधारित चयन प्रभावित होता है।
- **प्रशिक्षण की लागत:** आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के कई प्रतिभाशाली एथलीटों को पेशेवर प्रशिक्षण और उपकरणों की उच्च लागत वहन करने में कठिनाई होती है, जिसके कारण वे जल्दी ही पढ़ाई छोड़ देते हैं।

खेल संस्कृति को बढ़ावा देने की योजना

- **खेलो इंडिया योजना:** 2018 में शुरू की गई, इसका उद्देश्य बुनियादी स्तर पर एक मजबूत खेल पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है। यह विभिन्न खेलों में प्रतिभाओं की पहचान करने और उन्हें विकसित करने, प्रशिक्षण और विकास के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

- राष्ट्रीय खेल प्रतिभा खोज योजना (NSTSS) युवा मामले एवं खेल मंत्रालय द्वारा 8-12 वर्ष की आयु के बच्चों में खेल प्रतिभाओं की पहचान करने और उन्हें विकसित करने के लिए एक कार्यक्रम है।
- **खेल अवसंरचना:** भारत में अब लगभग 100 खेल सुविधाएँ हैं जो अंतर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा करती हैं।
- राष्ट्रीय निवेश पाइपलाइन (NIP) और राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन (NMP) खेल अवसंरचना को और बढ़ाने के लिए दो प्रमुख पहल हैं।
- **लक्ष्य ओलंपिक पोडियम योजना (TOPS):** इसे 2014 में ओलंपिक के लिए संभावित पदक संभावनाओं की पहचान करने, उन्हें तैयार करने और भारत की पदक संभावनाओं को बढ़ाने के मिशन के साथ शुरू किया गया था। इसमें शामिल हैं;
  - एलीट एथलीट पहचान
  - वित्तीय सहायता।

आगे की राह

- **खेल संस्कृति:** कम उम्र से ही खेल संस्कृति विकसित करना महत्वपूर्ण है। स्कूलों, कॉलेजों और स्थानीय समुदायों को शिक्षा के अतिरिक्त खेलों को भी सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिए।
- **विविध खेल:** क्रिकेट से परे खेलों को शामिल करने के लिए मीडिया कवरेज और प्रायोजन में विविधता लाने से संतुलित खेल संस्कृति बनाने में सहायता मिलेगी।
- **बुनियादी ढांचे का रखरखाव:** बुनियादी ढांचे का विकास आवश्यक है, लेकिन वर्तमान सुविधाओं को बनाए रखना और उनका उन्नयन करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।
- **लैंगिक समानता:** महिला एथलीटों के लिए समान पहुँच और समर्थन सुनिश्चित करना, साथ ही सामाजिक बाधाओं को दूर करना, भारत के समग्र खेल प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

Source: HT

भारत के प्रधानमंत्री और मालदीव के राष्ट्रपति के बीच द्विपक्षीय वार्ता

सन्दर्भ

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मालदीव के राष्ट्रपति ने द्विपक्षीय संबंधों की व्यापक समीक्षा की।

परिचय

- प्रधानमंत्री ने अपनी 'पड़ोसी पहले' नीति एवं विजन सागर के तहत मालदीव के महत्व को रेखांकित किया और मालदीव की विकास यात्रा तथा प्राथमिकताओं में सहायता करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की।
- भारत ने मालदीव को 400 मिलियन डॉलर और 3,000 करोड़ रुपये की द्विपक्षीय मुद्रा परिवर्तन का समर्थन दिया है। यह समर्थन मालदीव के सामने मौजूद वित्तीय चुनौतियों से निपटने में सहायक होगा।

भारत और मालदीव संबंधों का विकास

- **प्रारंभिक राजनयिक संबंध (1965-1978):** मालदीव ने 1965 में ब्रिटिशों से स्वतंत्रता प्राप्त की, और भारत के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए।
  - भारत मालदीव को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक था।

- **रणनीतिक साझेदारी (1978-1988):** 1979 में समुद्री सीमा समझौते पर हस्ताक्षर करने से दोनों देशों के बीच समुद्री सीमाओं को परिभाषित करने में सहायता मिली।
- **राजनीतिक अशांति (1988-2008):** 1988 में मालदीव में तख्तापलट की कोशिश के बाद ऑपरेशन कैक्टस में भारतीय सेना के हस्तक्षेप के कारण संबंधों को चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
    - भारत के सैन्य हस्तक्षेप का उद्देश्य तख्तापलट को विफल करना और मालदीव की राजनीतिक स्थिरता को बनाए रखना था।
    - इस घटना ने अस्थायी रूप से राजनयिक संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया लेकिन बाद में इसे सुलझा लिया गया।
- **सामान्यीकरण और आर्थिक सहयोग (2008-2013):** 2008 में, मालदीव ने एक शांतिपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन का अनुभव किया, और मोहम्मद नशीद राष्ट्रपति बने।
    - भारत और मालदीव के बीच संबंधों में सुधार हुआ, जिसमें आर्थिक सहयोग, व्यापार और लोगों के बीच आपसी संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया गया।
    - भारत ने मालदीव को विकास सहायता प्रदान की, विशेष रूप से बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और क्षमता निर्माण में।
- **तनाव की अवधि (2013-2018):** अब्दुल्ला यामीन के राष्ट्रपतित्व के दौरान संबंधों को चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसमें लोकतांत्रिक पतन, मानवाधिकार और चीन की ओर झुकाव जैसे मुद्दों पर चिंताएँ थीं।
    - बेल्ट एंड रोड पहल के तहत बुनियादी ढांचा परियोजनाओं सहित चीन के साथ मालदीव की बढ़ती भागीदारी ने भारत के लिए रणनीतिक चिंताएँ बढ़ा दीं।
- **नवीनीकृत भागीदारी (2018-2023):** 2018 में मालदीव के राष्ट्रपति के रूप में इब्राहिम मोहम्मद सोलिह के चुनाव ने द्विपक्षीय संबंधों में बदलाव को चिह्नित किया। भारत के साथ संबंधों को मजबूत करने पर नए सिरे से बल दिया गया।
    - दोनों देशों ने लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की और भारत ने विभिन्न विकास परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।

मालदीव का महत्व:

- **सामरिक महत्व:** मालदीव हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से स्थित है, और इसकी स्थिरता तथा सुरक्षा भारत के लिए महत्वपूर्ण है।
- **व्यापार मार्ग:** अदन की खाड़ी और मलक्का जलडमरूमध्य के बीच महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्गों पर स्थित, मालदीव भारत के लगभग आधे बाहरी व्यापार तथा 80% ऊर्जा आयात के लिए "टोल गेट" के रूप में कार्य करता है।

- **चीन का प्रतिसंतुलन:** मालदीव भारत के लिए हिंद महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव का प्रतिसंतुलन करने तथा क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को बढ़ावा देने का अवसर प्रस्तुत करता है।

भारत-मालदीव पर संक्षिप्त जानकारी

- **विभिन्न मंचों में भागीदारी:** दोनों देश दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC), दक्षिण एशियाई आर्थिक संघ के संस्थापक सदस्य हैं और दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षरकर्ता हैं।
- **आर्थिक भागीदारी:** भारत 2022 में मालदीव का दूसरा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार और 2023 में सबसे बड़ा व्यापार भागीदार बनकर उभरा।
  - भारत मालदीव के लिए सबसे बड़े निवेशकों और पर्यटन बाजारों में से एक है, जहाँ महत्वपूर्ण व्यापार और बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ चल रही हैं।
- **रक्षा और सुरक्षा सहयोग:** 1988 से, रक्षा और सुरक्षा भारत तथा मालदीव के बीच सहयोग का एक प्रमुख क्षेत्र रहा है।
  - रक्षा भागीदारी को मजबूत करने के लिए 2016 में रक्षा के लिए एक व्यापक कार्य योजना पर भी हस्ताक्षर किए गए थे।
  - अनुमान बताते हैं कि मालदीव का लगभग 70 प्रतिशत रक्षा प्रशिक्षण भारत द्वारा किया जाता है - या तो द्वीपों पर या भारत की विशिष्ट सैन्य अकादमियों में।
- **पर्यटन:** 2023 में, भारत 11.8% बाजार हिस्सेदारी के साथ मालदीव के लिए अग्रणी स्रोत बाजार है।
  - मार्च 2022 में, भारत और मालदीव ने खुले आसमान की व्यवस्था के लिए सहमति व्यक्त की, जिससे दोनों देशों के बीच संपर्क में और सुधार होगा।
- **कनेक्टिविटी:** माले से थिलाफुशी लिंक परियोजना, जिसे ग्रेटर माले कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट (GMCP) के रूप में जाना जाता है, 530 मिलियन अमरीकी डालर की बुनियादी ढांचा परियोजना है जिसका उद्देश्य मालदीव की राजधानी और दक्षिण हिंद महासागर में स्थित एक द्वीप थिलाफुशी के बीच सीधा संपर्क स्थापित करना है।

चुनौतियां:

- **मालदीव में घरेलू उतार-चढ़ाव:** हाल ही में राजनीतिक उतार-चढ़ाव और सरकार में बदलाव अनिश्चितता उत्पन्न करते हैं और दीर्घकालिक सहयोग परियोजनाओं को जटिल बनाते हैं।
- **चीनी प्रभाव:** मालदीव में चीन की बढ़ती आर्थिक उपस्थिति, जिसका साक्ष्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और ऋण-जाल कूटनीति में निवेश है, को इस क्षेत्र में भारत के रणनीतिक हितों के लिए एक चुनौती के रूप में देखा जाता है।
    - मालदीव के सक्रिय समर्थन से हिंद महासागर में चीनी नौसेना का विस्तार और संभावित सैन्य महत्वाकांक्षाएं भारत के लिए चिंता का विषय हो सकती हैं।
- **गैर-पारंपरिक खतरे:** समुद्री डकैती, आतंकवाद और मादक पदार्थों की तस्करी इस क्षेत्र में चिंता का विषय बनी हुई है, जिसके लिए भारत तथा मालदीव के बीच निरंतर सहयोग एवं खुफिया जानकारी साझा करने की आवश्यकता है।
- **उग्रवाद और कट्टरपंथ:** धार्मिक उग्रवाद और कट्टरपंथ के प्रति मालदीव की संवेदनशीलता एक सुरक्षा खतरा है, जिसके लिए ऐसी विचारधाराओं का सामना करने के लिए संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।
- **व्यापार असंतुलन:** भारत और मालदीव के बीच महत्वपूर्ण व्यापार असंतुलन असंतोष को जन्म देता है और व्यापार साझेदारी में विविधता लाने की मांग करता है।

आगे की राह

- भारत-मालदीव संबंधों का विकास भू-राजनीतिक गतिशीलता, नेतृत्व में परिवर्तन और साझा क्षेत्रीय हितों के संयोजन को दर्शाता है।
- भारत मालदीव के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं में दृढ़ है और संबंधों को बेहतर बनाने के लिए हमेशा अतिरिक्त प्रयास करता रहा है।
- सावधानीपूर्वक पोषित सर्वव्यापी साझेदारी को समाप्त करने के लिए कोई भी आवेगपूर्ण कदम भारत से अधिक मालदीव को हानि पहुंचा सकता है।
- चुनौतियों को स्वीकार करके और उनका समाधान करके, भारत एवं मालदीव अपने संबंधों की जटिलताओं को दूर कर सकते हैं और भविष्य के लिए एक मजबूत, अधिक लचीली तथा पारस्परिक रूप से लाभकारी साझेदारी का निर्माण कर सकते हैं।

Source: AIR

सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज(UHC)

सन्दर्भ

- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि "भारत की स्वास्थ्य प्रणाली सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (UHC) प्राप्त करने के लिए "संपूर्ण सरकार" और "संपूर्ण समाज" के दृष्टिकोण को अपनाती है।"

सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज क्या है?

- इसका अर्थ है कि सभी लोगों को वित्तीय कठिनाई के बिना गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की पूरी श्रृंखला तक पहुँच प्राप्त हो।
- UHC के प्रमुख घटकों में शामिल हैं:
  - **देखभाल तक पहुँच:** हर किसी को ज़रूरत पड़ने पर आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए।
  - **गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ:** प्रदान की जाने वाली देखभाल प्रभावी, सुरक्षित और अच्छी गुणवत्ता वाली होनी चाहिए।
  - **वित्तीय सुरक्षा:** व्यक्तियों को चिकित्सा व्यय के कारण वित्तीय कठिनाइयों का सामना नहीं करना चाहिए।
- UHC को प्राप्त करना उन लक्ष्यों में से एक है जिसे विश्व के देशों ने 2015 में 2030 सतत विकास लक्ष्यों (SDG) को अपनाते समय निर्धारित किया था।

भारत में UHC

- **संवैधानिक प्रावधान:** संविधान के भाग IV में राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत स्वास्थ्य के अधिकार के लिए आधार प्रदान करते हैं।
  - अनुच्छेद 39 (e) राज्य को श्रमिकों के स्वास्थ्य को सुरक्षित करने का निर्देश देता है; अनुच्छेद 42 काम की न्यायसंगत और मानवीय स्थितियों और मातृत्व राहत पर बल देता है; और
  - अनुच्छेद 47 राज्य पर पोषण स्तर और जीवन स्तर को बढ़ाने और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार करने का कर्तव्य डालता है।
- संविधान अनुच्छेद 243G के तहत सार्वजनिक स्वास्थ्य को मजबूत करने के लिए पंचायतों और नगर पालिकाओं को भी अधिकार देता है। भारत की 1983 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति ने "सभी के लिए स्वास्थ्य" के लक्ष्य को मान्यता दी और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा एवं स्वास्थ्य सेवा संसाधनों के समान वितरण के महत्व पर बल दिया।
- वर्तमान में, भारत का लक्ष्य केंद्र सरकार की प्रमुख सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित स्वास्थ्य बीमा (PFHI) योजना आयुष्मान भारत-प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना (AB-PMJAY) के विस्तार के माध्यम से UHC प्राप्त करना है।

भारत में UHC की आवश्यकता

- **जेब से खर्च:** भारत में स्वास्थ्य सेवा व्यय का 40 प्रतिशत से अधिक हिस्सा जेब से वहन किया जाता है, जो विश्व भर में सबसे अधिक दरों में से एक है।
  - परिणामस्वरूप, ये लागत प्रत्येक वर्ष 60 मिलियन से अधिक भारतीयों को गरीब बनती है।
  - कोविड-19 महामारी ने मजबूत और सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों की महत्वपूर्ण आवश्यकता को रेखांकित किया है।

- **समन्वय की कमी:** हालाँकि राष्ट्रीय और राज्यों में विभिन्न सामाजिक स्वास्थ्य बीमा योजनाएँ उपस्थित हैं, लेकिन उनका समन्वय अपर्याप्त है, जिसके कारण आंशिक ओवरलैप होता है और उनकी पूरी क्षमता का कम उपयोग होता है।
- **निवारक स्वास्थ्य सेवाएँ:** UHC निवारक स्वास्थ्य सेवाओं पर बल देता है, जिससे बीमारियों का जल्द पता लगाने और प्रबंधन करने में सहायता मिल सकती है, जिससे अंततः पुरानी बीमारियों का भार कम हो सकता है और जनसंख्या स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।

सरकारी पहल

- राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) 2005 में शुरू किया गया, यह ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा को मजबूत करने के उद्देश्य से भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम था।
  - कार्यक्रम मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, टीकाकरण, पोषण और संचारी रोगों पर केंद्रित था।
- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (2017):** इस नीति का उद्देश्य प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा, निवारक उपायों और स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर बल देते हुए सभी को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करके UHC प्राप्त करना है।
- **आयुष्मान भारत - प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM-JAY):** 2018 में, भारत ने आयुष्मान भारत कार्यक्रम शुरू किया, जिसमें दो घटक शामिल हैं - स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र (HWC) और PM-JAY।
  - PM-JAY विश्व की सबसे बड़ी सरकारी वित्त पोषित स्वास्थ्य बीमा योजना है, जो 500 मिलियन से अधिक कमजोर व्यक्तियों को स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करती है।

भारत में UHC अपनाने में चुनौतियाँ

- **संसाधन की कमी:** भारत को स्वास्थ्य सेवा में महत्वपूर्ण वित्तीय सीमाओं का सामना करना पड़ता है, कई अन्य देशों की तुलना में सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय कम है। यह व्यापक सेवाएँ प्रदान करने की क्षमता को प्रभावित करता है।
- **बुनियादी ढाँचे की कमी:** कई क्षेत्रों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, अस्पतालों, क्लीनिकों और प्रशिक्षित कर्मियों सहित पर्याप्त स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढाँचे की कमी है, जिससे देखभाल तक पहुँच मुश्किल हो जाती है।
- **स्वास्थ्य सेवा कार्यबल की कमी:** विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों की कमी है, जिससे देखभाल की पहुँच और गुणवत्ता में असमानताएँ उत्पन्न होती हैं।
- **विखंडित स्वास्थ्य प्रणाली:** भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली सार्वजनिक और निजी प्रदाताओं का मिश्रण है, जिससे गुणवत्ता और पहुँच में असंगतियाँ उत्पन्न होती हैं।

निष्कर्ष

- भारत ने स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच में सुधार लाने की दिशा में विभिन्न नीतियाँ अपनाई हैं और UHC को प्राप्त करने के लिए कई वैश्विक स्वास्थ्य नीतियों पर उत्साही हस्ताक्षरकर्ता रहा है।
- हालाँकि, इन नीतिगत प्रतिबद्धताओं के बावजूद, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सीमित सफलता मिली है।

- स्वस्थ जनसँख्या एक सशक्त जनसँख्या होती है। बीमारी का भर जितना हल्का होगा, देश की वित्तीय सेहत उतनी ही बेहतर होगी।
- स्वास्थ्य प्रणालियों में निवेश करने और UHC को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति, पर्याप्त निवेश एवं एक स्पष्ट, दीर्घकालिक दृष्टि की आवश्यकता होती है।
- राष्ट्रीय UHC नीति को राज्यों में लगातार लागू करने के लिए एक सुसंगत नीति मार्ग की स्थापना इसकी सफलता के लिए अनिवार्य है।

Source: AIR

निवेश पर भारत-UAE उच्च स्तरीय संयुक्त कार्य बल

समाचार में

- भारत-UAE उच्च स्तरीय संयुक्त निवेश कार्यबल (HLJTFI) की 12वीं बैठक मुंबई में हुई

निवेश पर भारत-UAE उच्च स्तरीय संयुक्त कार्यबल(HLJTFI) के बारे में

- इसकी स्थापना 2013 में भारत और UAE के बीच व्यापार, निवेश और आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए की गई थी।
- इसने भारत और UAE में आगे के निवेश के अवसरों और संभावनाओं पर चर्चा करने के लिए एक प्रभावी तंत्र प्रदान किया है, साथ ही दोनों देशों के निवेशकों के सामने आने वाले मुद्दों को हल करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया है।

नवीनतम घटनाक्रम

- प्रधानमंत्री मोदी की 2024 की UAE यात्रा के दौरान द्विपक्षीय निवेश संधि पर हस्ताक्षर किए गए, इसकी पुष्टि की गई और 31 अगस्त 2024 को यह लागू हो गई।
  - यह पिछले द्विपक्षीय निवेश संवर्धन और संरक्षण समझौते (BIPPA) का स्थान लेता है जो सितंबर 2024 में समाप्त हो गया है।
  - संधि का उद्देश्य राज्य के नियामक प्राधिकरण को सुनिश्चित करते हुए निवेशक सुरक्षा प्रदान करके द्विपक्षीय निवेशों की रक्षा और प्रोत्साहन करना है।
    - यह संधि अधिग्रहण के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करती है, पारदर्शिता सुनिश्चित करती है, तथा हानि के लिए क्षतिपूर्ति प्रदान करती है।
    - यह पोर्टफोलियो निवेश को कवर करती है, अपमानजनक व्यवहार को प्रतिबंधित करती है, तथा भ्रष्टाचार या धोखाधड़ी से जुड़े दावों को अस्वीकार करती है।
- मई 2022 से सक्रिय व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA) ने राष्ट्रों के बीच व्यापार और FDI को बढ़ावा दिया है, जिससे द्विपक्षीय गैर-तेल व्यापार H1 2024 में $28.2 बिलियन तक पहुँच गया है, जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 9.8% की वृद्धि है।
  - भारत और UAE के बीच कुल व्यापार 2023-24 में $84 बिलियन तक पहुँच गया, जिसमें व्यापार घाटा $12 बिलियन कम हुआ।

- गैर-तेल व्यापार में 9.8% की वृद्धि हुई, और भारत में UAE का FDI तीन गुना बढ़कर $3.35 बिलियन तक पहुँच गया।

- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI):** UAE भारत का चौथा सबसे बड़ा निवेशक है, जिसने 2023 में 3.35 बिलियन डॉलर का निवेश किया है, जो 2022 की तुलना में तीन गुना वृद्धि है, जबकि UAE में भारतीय FDI 2.05 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है।
  - UAE भारत का सातवां सबसे बड़ा FDI स्रोत है, जिसने अप्रैल 2000 से जून 2024 तक 19 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश किया है, जबकि UAE में भारतीय निवेश कुल 15.26 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। BIT से निवेशकों का विश्वास बढ़ने और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की उम्मीद है, जो मई 2021 से प्रभावी दोनों देशों के बीच वर्तमान मुक्त व्यापार समझौते का पूरक है।
- **रणनीतिक क्षेत्र:** ऊर्जा, AI, लॉजिस्टिक्स, खाद्य, कृषि और बुनियादी ढांचे ने भारत में UAE के लगभग 100 बिलियन डॉलर के निवेश को आकर्षित किया है।
- **गिफ्ट सिटी:** अबू धाबी निवेश प्राधिकरण (ADIA) भारत के GIFT सिटी में एक सहायक कंपनी स्थापित करेगा।
- **डिजिटल भुगतान:** भारत एवं UAE भारत के UPI और UAE के AANI सिस्टम को आपस में जोड़ने के लिए कार्य कर रहे हैं, जिससे UAE में 3 मिलियन से अधिक भारतीयों के लिए निर्बाध सीमा पार लेनदेन की सुविधा होगी।
- **भारत में फूड पार्क:** UAE ने अगले 2-2.5 वर्षों में भारत में फूड पार्कों में 2 बिलियन डॉलर का निवेश करने की प्रतिबद्धता जताई है। ये पार्क UAE की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे, भारतीय किसानों की आय बढ़ाएंगे और रोजगार सृजित करेंगे। एक कार्य समूह खाद्य गलियारों के विकास की देखरेख करेगा।
- **इन्वेस्ट इंडिया ऑफिस:** भारत दुबई में अपना पहला "इन्वेस्ट इंडिया" ऑफिस खोलेगा और UAE नई दिल्ली में एक ऐसा ही ऑफिस खोलेगा।
- **भारत मार्ट:** 2026 तक पूरा होने की उम्मीद है, भारत मार्ट भारतीय कंपनियों को विश्व स्तरीय लॉजिस्टिक्स प्रदान करेगा। 1,400 इकाइयों के लिए 9,000 से अधिक अभिरुचि पत्र प्राप्त हुए हैं।
- **दुबई में IIFT:** भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (IIFT) दुबई में अपना पहला विदेशी परिसर खोलेगा, जिसमें 2025 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हो जाएँगे।
- **परमाणु सहयोग:** सितंबर 2024 में, भारत और संयुक्त अरब अमीरात (UAE) ने असैन्य परमाणु सहयोग के लिए अपने पहले समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए।
  - MoU परमाणु ऊर्जा में निवेश करने की UAE की व्यापक नीति का हिस्सा है, और यह भारत, UAE एवं फ्रांस के बीच त्रिपक्षीय सहयोग ढांचे से जुड़ा हुआ है, जिसे 2022 में सौर तथा परमाणु सहित ऊर्जा परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए लॉन्च किया जाएगा।

चुनौतियाँ

- भारत ने चांदी के लिए भारत-UAE व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPA) के तहत उत्पत्ति के नियमों के कार्यान्वयन पर चिंता व्यक्त की है, क्योंकि व्यापार समझौते के कार्यान्वयन के बाद इसके

आयात में तेजी आई है। प्रवासियों के लिए श्रम अधिकारों से संबंधित मुद्दे हैं, क्षेत्र में भू-राजनीतिक तनाव हैं।

निष्कर्ष और आगे की राह

- भारत-UAE संबंधों में वृद्धि की महत्वपूर्ण संभावना है, जो दोनों देशों के आर्थिक विविधीकरण और सतत विकास के लक्ष्यों से प्रेरित है।
    - दोनों पक्ष निवेश में आने वाली बाधाओं पर चर्चा कर रहे हैं, तथा समय पर समाधान की तलाश कर रहे हैं।
- एक-दूसरे की ताकत का लाभ उठाकर, विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा, प्रौद्योगिकी और नवाचार जैसे उभरते क्षेत्रों में, वे एक लचीली साझेदारी बना सकते हैं।

Source: PIB

इंसॉल्वेन्सी और बैंककरप्सी फ्रेमवर्क की वसूली दरों को बढ़ाने के लिए सुधारों की आवश्यकता

सन्दर्भ

- वित्त पर संसद की स्थायी समिति ने इंसॉल्वेन्सी और बैंककरप्सी संहिता (IBC) 2016 के डिजाइन पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता पर चिंता जताई है।

इंसॉल्वेन्सी और बैंककरप्सी संहिता (IBC) 2016

- भारत में बढ़ती गैर निष्पादित परिसंपत्तियों और अप्रभावी ऋण वसूली तंत्रों को संबोधित करने के लिए 2016 में IBC की शुरुआत की गई थी।
- इसका उद्देश्य कॉर्पोरेट संकट समाधान प्रणाली में सुधार करना है, समयबद्ध समाधानों के लिए देनदार-नियंत्रित व्यवस्थाओं को लेनदार-नियंत्रित तंत्रों से बदलना है।
- भारतीय इंसॉल्वेन्सी और बैंककरप्सी बोर्ड (IBBI) के अनुसार IBC समाधान के उद्देश्य हैं;
    - **व्यवसाय पुनरुद्धार:** पुनर्गठन, स्वामित्व में परिवर्तन या विलय के माध्यम से व्यवसायों को बचाना,
    - **संपत्ति मूल्य का अधिकतमकरण:** देनदार की परिसंपत्तियों के मूल्य को संरक्षित और अधिकतम करना,
    - **उद्यमिता और ऋण को बढ़ावा देना:** उद्यमिता को प्रोत्साहित करना, ऋण उपलब्धता में सुधार करना और लेनदारों और देनदारों सहित हितधारकों के हितों को संतुलित करना।

IBC ने समाधान सुधारने में किस प्रकार सहायता की है?

- मार्च 2024 तक, बैंकों का सकल NPA (GNPA) अनुपात 4.8 ट्रिलियन रुपये या बकाया ऋणों का 2.80% था, जो ऐतिहासिक रूप से सबसे कम है।
- समाधान योजना के माध्यम से हल किए गए मामलों की संख्या का हिस्सा वित्त वर्ष 2018 में 17% से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 38% हो गया।

- IBC की शुरुआत के बाद से, भारत ने अपनी ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस रैंकिंग (विश्व बैंक रिपोर्ट 2020 के आधार पर) में सुधार किया है, विशेष रूप से इंसॉल्वेन्सी का समाधान' में, जो 2016 में 136 से 2020 में 52 हो गया।

चिंताएँ

- **प्रक्रियागत देरी:** राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण (NCLT) में औसत समाधान समय वित्त वर्ष 24 में बढ़कर 716 दिन हो गया। अधिक देरी का संबंध कम वसूली दरों से है।
- **बहुत कम समय में निपटाए गए मामले:** 330 दिनों के अंदर निपटाए गए मामलों में 49.2% वसूली दर थी, लेकिन 600 दिनों से अधिक समय लेने वाले मामलों में यह घटकर 26.1% रह गई। ये समय में कटौती (कम वसूली) लेनदारों के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है।
- **कानूनी मुद्दे:** उच्चतम न्यायालय ने 2022 में निर्णय दिया कि मामलों को स्वीकार करने के लिए NCLT की 14-दिवसीय अवधि अनिवार्य नहीं है। इससे NCLT को विवेकाधीन शक्तियाँ मिल जाती हैं, जिससे मामलों के दाखिले की गति धीमी हो जाती है।
- **मानव संसाधन की कमी:** NCLT को कर्मियों की कमी का सामना करना पड़ रहा है। वार्षिक 20,000 से अधिक मामले लंबित होने के कारण, पर्याप्त कर्मचारियों की कमी प्रणाली को पंगु बना रही है। सीमा पार इंसॉल्वेन्सी के लिए स्पष्ट रूपरेखा का अभाव तथा रियल एस्टेट, बिजली और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों के समक्ष आने वाली अद्वितीय चुनौतियों के कारण IBC के तहत इंसॉल्वेन्सी समाधान और भी जटिल हो जाते हैं।
- यू.के., यू.एस. और सिंगापुर जैसे देश इंसॉल्वेन्सी के मामलों को एक वर्ष के अंदर सुलझा लेते हैं, जबकि भारत में IBC के मामलों में औसतन 600 दिन से अधिक का समय लगता है, जो सुधारों की आवश्यकता को दर्शाता है।

आगे की राह

- इंसॉल्वेन्सी और बैंककरप्सी संहिता (IBC) के अंतर्गत चुनौतियों पर नियंत्रण पाने के लिए, कई सुधारों का प्रस्ताव किया गया है:
  - **एकीकृत प्रौद्योगिकी प्लेटफ़ॉर्म:** समाधान प्रक्रिया में पारदर्शिता, स्थिरता और दक्षता सुनिश्चित करना।
  - **NCLT में सुधार:** वर्तमान 15 बेंचों से विस्तार करना, अधिक सदस्यों की नियुक्ति करना और कंपनी अधिनियम, 2013 के अंतर्गत नए न्यायाधिकरणों की शुरुआत करना।
  - **MSMEs के लिए प्री-पैकेज्ड इंसॉल्वेन्सी :** छोटे व्यवसायों के लिए समाधान में तेज़ी लाना।
  - **आउट ऑफ़ कोर्ट समझौता:** बैठक समय(Haircut) और न्यायालयी कार्यवाही को कम करने के लिए समझौतों को प्रोत्साहित करना।
  - प्रक्रिया में देरी, न्यायालयों पर अत्यधिक भार, तथा ऋणदाताओं की कटौती के प्रति अनिच्छा जैसी चुनौतियों का समाधान करके भारत उन्नत अर्थव्यवस्थाओं जैसे परिपक्व ढांचों के साथ अंतर को समाप्त कर सकता है।

Source: IE

सतत भविष्य के लिए उच्च प्रदर्शन वाली इमारतों की आवश्यकता

सन्दर्भ

- सतत इमारतें उत्सर्जन, ऊर्जा उपयोग और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने में महत्वपूर्ण हैं, तथा जलवायु लक्ष्यों को कुशलतापूर्वक पूरा करने में सहायता करती हैं।

ऊर्जा उपभोग परिदृश्य

- वैश्विक स्तर पर, इमारतें अपने जीवनकाल में कुल अंतिम ऊर्जा खपत का लगभग 40% हिस्सा लेती हैं, मुख्य रूप से परिचालन आवश्यकताओं जैसे कि HVAC सिस्टम और प्रकाश व्यवस्था को चलाने के लिए।
- इस ऊर्जा उपयोग से ऑन-साइट ऊर्जा खपत और बिजली संयंत्रों तथा अन्य ऑफ-साइट स्रोतों से अप्रत्यक्ष उत्सर्जन दोनों से उत्पन्न ऊर्जा-संबंधित कार्बन उत्सर्जन का 28% होता है।
- भारत में ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के अनुसार, इमारतें राष्ट्रीय ऊर्जा उपयोग का 30% से अधिक और इसके कार्बन उत्सर्जन का 20% भाग हैं।

उच्च प्रदर्शन भवन (HPBs) क्या हैं?

- उच्च-प्रदर्शन इमारतें (HPBs) ऐसी संरचनाएं हैं जिन्हें ऊर्जा उपयोग, जल संरक्षण और रहने वालों के आराम में अधिकतम दक्षता प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो मानक स्थिरता प्रथाओं से परे हैं।
    - उनके डिजाइन में प्राकृतिक प्रकाश व्यवस्था, वेंटिलेशन और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए धारणीय सामग्री जैसी साइट-विशिष्ट रणनीतियाँ शामिल हैं।
- वे ऊर्जा-कुशल HVAC सिस्टम, स्मार्ट लाइटिंग और वर्षा जल संचयन जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग करते हैं।
- HPBs वास्तविक समय के प्रदर्शन की निगरानी करने और संसाधन उपयोग को अनुकूलित करने के लिए बिल्डिंग मैनेजमेंट सिस्टम (BMS) से भी लैस हैं।

उच्च प्रदर्शन इमारतों (HPBs) के लाभ

- **शहरीकरण समाधान:** HPBs भारत के तेजी से बढ़ते शहरीकरण के लिए सक्रिय समाधान प्रदान करते हैं, जिससे देश कम कार्बन, टिकाऊ अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर होता है।
- **लचीलापन:** भारत जैसे संसाधन-विहीन वातावरण में, HPBs ऊर्जा बाजारों में उतार-चढ़ाव और बढ़ते तापमान के लिए आत्मनिर्भर और अनुकूल होने के द्वारा लचीलापन को बढ़ावा देते हैं।
    - मुंबई में TCS बरगद पार्क जैसी परियोजनाएँ रणनीतिक प्रकाश व्यवस्था और हरित स्थान एकीकरण के माध्यम से कम संसाधन खपत को प्रदर्शित करती हैं।
- **बुद्धिमान प्रणाली:** स्वचालन और AI HPBs को अधिभोग या मौसम की स्थिति के आधार पर प्रकाश, तापमान और वेंटिलेशन को समायोजित करने की अनुमति देते हैं, जिससे एक व्यक्तिगत और ऊर्जा-कुशल वातावरण बनता है।

- **लागत दक्षता:** समय के साथ, HPBs स्मार्ट सिस्टम और धारणीय सामग्रियों के कारण ऊर्जा बचत, जल संरक्षण और कम रखरखाव आवश्यकताओं के माध्यम से परिचालन लागत को कम करते हैं।

उच्च प्रदर्शन इमारतों (HPBs) की चुनौतियाँ

- **उच्च आरंभिक लागत:** HPBs के कारण निर्माण की लागत में वृद्धि होती है, जो कई डेवलपर्स के लिए बाधा बन सकती है।
- **तकनीकी जटिलता:** HPBs को डिजाइन करने और प्रबंधित करने के लिए ऊर्जा मॉडलिंग, स्मार्ट सिस्टम एकीकरण और संधारणीय डिजाइन रणनीतियों जैसे क्षेत्रों में विशेष ज्ञान और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।
- **नियामक बाधाएँ:** अलग-अलग बिल्डिंग कोड और स्थानीय नियम HPBs मानकों को सार्वभौमिक रूप से लागू करना मुश्किल बनाते हैं।
- **रखरखाव और निगरानी:** बिल्डिंग मैनेजमेंट सिस्टम (BMS) के माध्यम से निरंतर निगरानी के लिए कुशल कर्मियों और नियमित रखरखाव की आवश्यकता होती है, जिससे परिचालन जटिलता बढ़ जाती है।

आगे की राह

- **अपनाने को प्रोत्साहित करें:** सरकारें बिल्डरों और डेवलपर्स को HPBs में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कर छूट, सब्सिडी या कम ब्याज वाले ऋण की पेशकश कर सकती हैं, जिससे उच्च प्रारंभिक लागतों की भरपाई हो सके।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी:** सरकारों और निजी कंपनियों के बीच सहयोग HPBs के विकास को आगे बढ़ाने में सहायता करेगा, जिससे बड़े पैमाने की परियोजनाओं के लिए आवश्यक संसाधन और विशेषज्ञता उपलब्ध होगी।
- **R&D निवेश:** अभिनव सतत निर्माण सामग्री और ऊर्जा-कुशल प्रौद्योगिकियों के लिए अनुसंधान और विकास में निवेश में वृद्धि HPBs को अधिक किफायती और सुलभ बना सकती है।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

CareEdge भारत को BBB+ प्रदान करता है

समाचार में

CareEdge Global IFSC Ltd ने भारत को CareEdge BBB+ की दीर्घकालिक विदेशी मुद्रा (LTFC) रेटिंग प्रदान की।

- यह रेटिंग भारत की महामारी के बाद की मजबूत रिकवरी और बुनियादी ढांचे में निवेश पर ध्यान केंद्रित करने को दर्शाती है।

परिचय

- CareEdge ने 39 वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को कवर करते हुए सॉवरेन रेटिंग पर अपनी पहली रिपोर्ट जारी की है।
- इसके साथ ही CareEdge सॉवरेन रेटिंग सहित वैश्विक स्तर की रेटिंग के क्षेत्र में प्रवेश करने वाली पहली भारतीय क्रेडिट रेटिंग एजेंसी बन गई है।

सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग

- सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग किसी देश की अपने ऋण दायित्वों को पूरा करने की क्षमता का आकलन करती है।
    - अनुकूल रेटिंग किसी देश की वैश्विक पूंजी बाजारों तक पहुंच को बढ़ा सकती है और विदेशी निवेश को आकर्षित कर सकती है।
- सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग देशों को निवेश ग्रेड या सट्टा ग्रेड के रूप में वर्गीकृत करती है।
    - सट्टा ग्रेड निवेश ग्रेड की तुलना में उधार पर डिफ़ॉल्ट की अधिक संभावना को इंगित करता है।

Source: BS

शुष्क बंदरगाह (Dry Port)

सन्दर्भ

- तेलंगाना अपने उद्योगों के लिए लॉजिस्टिक्स सेवाओं को बढ़ाने के लिए शुष्क बंदरगाह सुविधाएं शुरू करने की तैयारी कर रहा है।

शुष्क बंदरगाह क्या है?

- शुष्क बंदरगाह एक अंतर्देशीय टर्मिनल है जिसका उद्देश्य रेल या सड़क मार्ग से समुद्री बंदरगाह को कनेक्टिविटी प्रदान करना है, इस प्रकार यह समुद्री कार्गो के लिए ट्रांस-शिपिंग हब के रूप में कार्य करता है।
- निर्यातक ड्राई डॉक पर सभी सीमा शुल्क औपचारिकताओं को पूरा कर सकता है, जिससे समय और लागत की बचत होती है।
- **उदाहरण:** नवी मुंबई शुष्क बंदरगाह, भारत के सबसे बड़े बंदरगाहों में से एक जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (JNPT) से जुड़ता है।

शुष्क बंदरगाहों की मुख्य विशेषताएं

- **सीमा शुल्क निकासी:** निर्यातक और आयातक शुष्क बंदरगाह पर सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को पूरा कर सकते हैं, जिससे बंदरगाहों पर भीड़ कम हो जाती है और देरी से बचा जा सकता है।
- **परिवहन केंद्र:** शुष्क बंदरगाहों को मजबूत परिवहन प्रणालियों (रेल या सड़क) के माध्यम से बंदरगाहों से जोड़ा जाता है, जिससे माल की सुचारू आवाजाही संभव होती है।
- **लागत दक्षता:** शुष्क बंदरगाहों का उपयोग करके, कंपनियाँ परिवहन लागत को कम कर सकती हैं और उत्पादन या उपभोग क्षेत्रों के करीब माल का भंडारण करके रसद को अनुकूलित कर सकती हैं।

- **बंदरगाहों की भीड़भाड़ कम करना:** शुष्क बंदरगाह सीमा शुल्क निकासी और प्रारंभिक प्रसंस्करण को अंतर्देशीय रूप से संभालकर बंदरगाहों पर दबाव को कम करते हैं, जिससे परिचालन में तेजी आती है।

Source: BL

छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर(SMR)

सन्दर्भ

- अमेरिकी कंपनी होलटेक, भारत के साथ मिलकर छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (SMR) आधारित परियोजनाएं स्थापित करने के लिए सार्वजनिक-निजी पहल को बढ़ावा देने पर बल दे रही है।

छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (SMR)

- ये उन्नत परमाणु रिएक्टर हैं जिनकी बिजली क्षमता 300 मेगावाट (e) प्रति यूनिट तक है, जो पारंपरिक परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों की उत्पादन क्षमता का लगभग एक तिहाई है।
- SMR, जो बड़ी मात्रा में कम कार्बन बिजली का उत्पादन कर सकते हैं, वे हैं:
  - **छोटे** - भौतिक रूप से यह पारंपरिक परमाणु ऊर्जा रिएक्टर के आकार का एक अंश मात्र है।
  - **मॉड्यूलर** - सिस्टम और घटकों को फैक्ट्री में एकत्रित करना और स्थापना के लिए एक इकाई के रूप में एक स्थान पर ले जाना संभव बनाता है।
  - **रिएक्टर** - ऊर्जा का उत्पादन करने के लिए ऊष्मा उत्पन्न करने के लिए परमाणु विखंडन का उपयोग करना।
- **महत्व:** उन्नत SMR कई लाभ प्रदान करते हैं, जैसे कि अपेक्षाकृत छोटे भौतिक पदचिह्न, कम पूंजी निवेश, बड़े परमाणु संयंत्रों के लिए संभव नहीं स्थानों पर स्थापित करने की क्षमता और वृद्धिशील बिजली परिवर्धन के प्रावधान।
  - SMR विशिष्ट सुरक्षा, सुरक्षा और अप्रसार लाभ भी प्रदान करते हैं।

Source: IE

अल्ट्रासाउंड से कैंसर का पता लगाने की नई विधि

सन्दर्भ

- वैज्ञानिकों ने अल्ट्रासाउंड का उपयोग करके कैंसर का पता लगाने की एक नई तकनीक विकसित की है।

परिचय

- अल्ट्रासाउंड का उपयोग करके इस विधि का उपयोग उच्च-ऊर्जा तरंगों को उत्पन्न करने के लिए किया जाता है जो संभावित कैंसरग्रस्त क्षेत्रों से ऊतक के छोटे टुकड़ों को तोड़ सकती हैं।
  - ये टुकड़े, बूंदों के रूप में, फिर रक्तप्रवाह में छोड़े जाते हैं।

- इन बूंदों में RNA, DNA और प्रोटीन जैसे बायोमोलेक्यूल्स होते हैं, जो बायोमार्कर के रूप में कार्य करते हैं, जो कैंसर के लिए विशिष्ट अणु हैं।
- वर्तमान में कैंसर का निदान बायोप्सी द्वारा किया जाता है, जहां इन विट्रो परीक्षणों के माध्यम से कैंसर की उपस्थिति और प्रकार की पुष्टि करने के लिए सुई का उपयोग करके एक छोटा ऊतक नमूना निकाला जाता है।

अल्ट्रासाउंड क्या है?

- अल्ट्रासाउंड एक प्रकार की ध्वनि तरंग है जिसकी आवृत्ति मानव श्रवण की ऊपरी सीमा से अधिक होती है, सामान्यतः 20,000 हर्ट्ज (20 kHz) से अधिक।
- **अनुप्रयोग:** अल्ट्रासाउंड का आमतौर पर उपयोग किया जाता है;
- गर्भावस्था के दौरान भ्रूण के विकास की जांच करना।
- हृदय, यकृत, गुर्दे और पित्ताशय जैसे अंगों को प्रभावित करने वाली स्थितियों का निदान करना।
- रक्त वाहिकाओं के माध्यम से रक्त प्रवाह की निगरानी करना (डॉपलर अल्ट्रासाउंड)।

Source: TH

DefConnect 4.0 में ADITI 2.0 और DISC 12 लॉन्च किए गए

समाचार में

- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने DefConnect 4.0 में दो प्रमुख पहलों: ADITI 2.0 और डिफेंस इंडिया स्टार्ट-अप चैलेंज (DISC 12) के 12वें संस्करण का अनावरण किया।

परिचय

- **ADITI 2.0:**
  - इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), क्वांटम टेक्नोलॉजी, सैन्य संचार, एंटी-ड्रोन सिस्टम और अनुकूली छलावरण (adaptive camouflage) पर केंद्रित 19 चुनौतियाँ शामिल हैं।
  - विजेता रक्षा संबंधी महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने के लिए 25 करोड़ रुपये तक के अनुदान के पात्र हैं।
- **डिफेंस इंडिया स्टार्ट-अप चैलेंजेस का 12वां संस्करण (DISC 12):**
  - मानव रहित हवाई वाहन (UAVs) और नेटवर्किंग जैसे क्षेत्रों में 41 चुनौतियों का परिचय।
  - इसमें चिकित्सा नवाचार और अनुसंधान उन्नति (MIRA) पहल शामिल है, जिसका लक्ष्य सशस्त्र बलों के लिए चिकित्सा प्रौद्योगिकी उन्नति को लक्षित करना है।
  - विजेताओं को 1.5 करोड़ रुपये तक का अनुदान मिल सकता है।
  - यह पहल प्रोटोटाइप विकसित करने और रक्षा उत्पादों के व्यावसायीकरण में स्टार्ट-अप, MSMEs और नवप्रवर्तकों का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन की गई है।

रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (iDEX) पहल

- **लॉन्च:** iDEX को रक्षा मंत्रालय के तहत रक्षा नवाचार संगठन (DIO) के हिस्से के रूप में 2018 में लॉन्च किया गया था।
- **उद्देश्य:** रक्षा और एयरोस्पेस प्रौद्योगिकियों में नवाचार, अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित करने वाला एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना। इसका उद्देश्य रक्षा आधुनिकीकरण प्रयासों में स्टार्ट-अप, MSMEs और व्यक्तिगत नवप्रवर्तकों को शामिल करना है।
- **प्रदान की गई सहायता:**
    - **वित्त पोषण:** प्रोटोटाइप विकास और व्यावसायीकरण के लिए अनुदान और वित्तीय सहायता।
    - **मेंटरशिप:** रक्षा विशेषज्ञों से इनक्यूबेशन सहायता और मार्गदर्शन।
    - **परीक्षण और सत्यापन:** विकसित प्रौद्योगिकियों के परीक्षण और सत्यापन के लिए रक्षा सुविधाओं और प्रयोगशालाओं तक पहुँच को सुगम बनाना।

Source: PIB

लाल पांडा

समाचार में

- पद्मजा नायडू हिमालयन जूलॉजिकल पार्क (PNHZP), दार्जिलिंग के लाल पांडा संरक्षण प्रजनन और संवर्धन कार्यक्रम को 2024 वाजा संरक्षण और पर्यावरण स्थिरता पुरस्कारों के लिए शीर्ष तीन फाइनलिस्टों(finalists) में से एक के रूप में मान्यता दी गई है।

लाल पांडा (ऐलुरस फुलगेन्स) के बारे में

- **पर्यावास:** भारत, नेपाल, भूटान, म्यांमार और दक्षिण-पश्चिमी चीन सहित पूर्वी हिमालय के समशीतोष्ण वन।
    - भारत में, लाल पांडा मुख्य रूप से सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल (विशेष रूप से सिंगालीला राष्ट्रीय उद्यान) और मेघालय के कुछ हिस्सों में पाया जाता है।
- **भौतिक विशेषताएँ:** लाल-भूरे रंग के फर, लंबी, झाड़ीदार पूंछ और छोटे आगे के पैरों के कारण चलने वाली चाल के साथ एक घरेलू बिल्ली से थोड़ा बड़ा।
    - मुख्य रूप से बांस खाता है, हालांकि यह फल, जामुन और कभी-कभी छोटे स्तनधारी और पक्षी भी खाता है।
- **संरक्षण स्थिति:** लुप्तप्राय (IUCN लाल सूची)
- **खतरे:** वनों की कटाई, कृषि विस्तार और मानव अतिक्रमण के कारण आवास की हानि।
    - उनके फर के लिए अवैध शिकार और अवैध पालतू व्यापार के हिस्से के रूप में।

Source: PIB

हलारी गधा

समाचार में

- गुजरात के हालार क्षेत्र का मूल निवासी हलारी गधा एक दुर्लभ और लुप्तप्राय नस्ल है, जिसकी संख्या 500 से भी कम रह गई है।

हलारी गधों के बारे में

- **क्षेत्र:** मुख्य रूप से गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के जामनगर और द्वारका जिलों में पाया जाता है।
- **उपस्थिति:** हलारी गधा सफेद रंग का, बड़ा और अन्य गधों की नस्लों की तुलना में अधिक लचीला होता है, जो इसे अर्ध-शुष्क परिदृश्य के लिए उपयुक्त बनाता है।
- **उपयोग:** पारंपरिक रूप से बांधों, किलों और मंदिरों के निर्माण में उपयोग किए जाने वाले गधे पत्थर और रेत के भारी भार को ढोने की अपनी प्रभावशाली क्षमता के लिए जाने जाते हैं।
- **आर्थिक मूल्य:** अपनी मिठास के लिए जाने जाने वाले उनके दूध की बहुत मांग है, अंतरराष्ट्रीय बाजार में दूध पाउडर की कीमत 7,000 रुपये प्रति किलोग्राम से अधिक है, खासकर कॉस्मेटिक उपयोगों के लिए।

Source: TH

भारतीय जंगली गधा

समाचार में

- गुजरात में भारतीय जंगली गधों की जनसँख्या पिछले पांच वर्षों में 26% बढ़कर कुल 7,672 हो गई है।
    - 2024 में 10वें जंगली गधे की जनसँख्या के अनुमान में 15,500 वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया।

भारतीय जंगली गधों के बारे में

- यह एशियाई जंगली गधे (इक्वस हेमियोनस) की एक उप-प्रजाति है।
    - यह खुले शुष्क पर्णपाती जंगलों में रहता है।
    - यह एकांतप्रिय और शर्मीला जानवर है, जो अपने वितरण क्षेत्र में कम घनत्व में पाया जाता है।

- **विवरण:** इसकी पहचान चार सींगों की उपस्थिति से होती है जो केवल वयस्क नर में ही पाए जाते हैं।
    - यह गुजरात के जंगली गधा अभयारण्य में अत्यधिक तापमान (45-50 डिग्री सेल्सियस) में जीवित रह सकता है और 50 से 70 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से दौड़ सकता है।
        - इसका प्राथमिक भोजन स्रोत रेगिस्तानी द्वीपों पर उगने वाली घास है।
- **वितरण:** ऐतिहासिक रूप से, यह प्रजाति दक्षिणी भारत से लेकर दक्षिणी पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान और दक्षिण-पूर्वी ईरान तक फैली हुई थी।

- वर्तमान में, जंगली गधे की अधिकांश जनसँख्या गुजरात के छह जिलों में रहती है:
  - सुरेंद्रनगर: 2,705
  - कच्छ: 1,993
  - पाटन: 1,615
  - बनासकांठा: 710
  - मोरबी: 642
  - अहमदाबाद: 7

- **महत्व:** यह क्षेत्र की जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी उपस्थिति विभिन्न आवासों की रक्षा करने में सहायता करती है, जिससे लकड़बग्घे, भेड़िये, चिंकारा और काले हिरण जैसी अन्य प्रजातियों को लाभ होता है।
- **खतरे:** कठोर जलवायु और गतिशील परिदृश्य जंगली गधे के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं
- **संरक्षण स्थिति:** जंगली गधे, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम की अनुसूची। के तहत संरक्षित हैं और प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ द्वारा "निकट संकटग्रस्त" के रूप में सूचीबद्ध हैं।

Source: TH

राष्ट्रीय अनुभव पुरस्कार योजना, 2025

समाचार में

- अनुभव पोर्टल पर लेख प्रकाशित करने की अंतिम तिथि 31 मार्च, 2025 है

परिचय

- पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग द्वारा मार्च 2015 में अनुभव ऑनलाइन प्लेटफॉर्म शुरू किया गया था, ताकि पात्र सेवानिवृत्त और सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारी अपने कार्य अनुभव साझा कर सकें।
- प्रतिवेदन को प्रोत्साहित करने के लिए 2015 में वार्षिक पुरस्कार योजना की स्थापना की गई
  - इस योजना में 10,886 लेख प्रकाशित हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप सात समारोहों में 59 अनुभव पुरस्कार और 19 जूरी प्रमाणपत्र प्रदान किए गए हैं।

राष्ट्रीय अनुभव पुरस्कार योजना, 2025:

- इस नई अधिसूचित योजना में केंद्र सरकार के कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को मूल्यांकन के लिए अपने अनुभव लेख प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया है, जिसकी अंतिम तिथि 31 मार्च, 2025 निर्धारित की गई है।
  - **विस्तारित पात्रता:** पहली बार, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (CPSUs) और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के कर्मचारी भी भाग ले सकते हैं, जिससे साझा अनुभवों का भंडार बढ़ेगा।
    - पेंशनभोगियों के लिए जमा करने की अवधि सेवानिवृत्ति के बाद एक वर्ष से बढ़ाकर तीन वर्ष कर दी गई है।

- **मूल्यांकन सुधार:** मूल्यांकन प्रक्रिया को कारगर बनाने के लिए विभिन्न वेतन स्तरों पर आधारित एक नई अंकन प्रणाली शुरू की गई है।
- **अतिरिक्त संसाधन:** पात्र कर्मचारी और पेंशनभोगी अनुभव पोर्टल पर प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्न, सबमिशन मार्गदर्शन, चयनित लेख, पुरस्कार विजेताओं के बारे में लघु फिल्में और प्रशस्ति पुस्तिकाएं प्राप्त कर सकते हैं।

Source: PIB

■■■■